सेन्टर्स में कोई समाचार तो जाते नहीं हैं। यहाँ सभी तरफ से जो समाचार आते हैं यहाँ वाले सभी सुनते हैं। जहाँ–2 अच्छी सर्विस होती है या कोई अच्छे–2 को समझाया जाता है तो समाचार यहाँ आते हैं, और कोई सेन्टर्स पर नहीं भेज देते हैं। तो इनको ये भी फायदा है ना। ...के साथ रहते हैं वो भी सौभाग्यशाली। ...जन्म सबसे अच्छा है; क्योंकि इस जन्म से ही तो देवता बनते हो। ईश्वरीय जन्म न हो तो दैवी जन्म भी न हो सके। तो इस संगम समय में जिनके बंधन कुछ कम हैं वो अच्छी तरह से पढ़ सकते हैं। उनको बहुत सहज होता है। नहीं तो देह सहित सभी संबंधो की विस्मृति करनी पड़ती है ना। जो भी मित्र–संबंधी हैं उन सबकी जितना हो सके इतना कम याद होती रहती है।... जैसे कि पीठ है इस तरफ में। तीर्थों पर जाते हैं तो भी पीठ देते हैं ना। ऊपर चले जाते हैं। वो तो फिर भी चारों तरफ फेरे पहनते हैं तीर्थ यात्राओं के और ये तो एक ही तरफ में जाना होता है। तो और ये सहज है, एक तरफ में बुद्धि का योग लगाना या यात्रा पर रहना। एक समझाना भी बड़ा सहज है। कोई भी मित्र–संबंधी हो तो भी उनको समझाना तो है कि ये भारत सतोप्रधान था तो भारत के मनुष्य सतोप्रधान थे। अभी ये जो तमोप्रधान बना है सो सतोप्रधान बनना ही है ज़रूर। अभी सृष्टि को नया बनाना ये तो बाप का काम है और बनती है ज़रूर कि ये पुरानी सृष्टि विनाश होती है और नई सृष्टि की स्थापना होती है। ये भी तो ज़रूर समझते हैं कि नई सो पुरानी, पुरानी सो ज़रूर नई। तो नए में जो रहने वाले हैं वो तो प्रसिद्ध हैं। तो ज़रूर उनको भी तो बनना है। तो देखो, तुम कैसे बन रहे हो फिर से सो देवता। ये वण्डरफुल बातें हैं ना। ये सिवाय सन्मुख होने और पढ़ने कोई की बुद्धि में ज़रा भी बैठ नहीं सके, कुछ कहाँ भी नहीं बैठ सके ; क्योंकि एवरीथिंग न्यू और वो सब हैं भक्तिमार्ग की पुरानी बातें। जन्म–जन्मांतर ये करते आए हैं, करते आए हैं, करते आते हैं। अभी मनुष्य से फिर से देवता बनना। बच्चे तो समझ गए हैं ना– हम भारतवासी देवताओं से फिर क्षत्रिय, फिर वैश्य, (फिर) शूद्र बनते हैं, सो भी जो आदि सनातनी देवी–देवता धर्म वाले हैं वो। तो जितनी कमाई और खुशी ; क्योंकि कमाई है ना। ये कमाई हो रही है। मनुष्य कमाई करते–3 मर जाते हैं और फिर वर्सा बच्चों को मिल जाता है। तो हम भी बाबा के बेहद के बच्चे हैं। हम भी पढ़ते–2 कमाते–3 जाकर बाप का वर्सा पा लेंगे। बाप से कमाई होती है। बड़ी जबरदस्त कमाई है। गाई भी गई है कि 21 पीढ़ी राज और भाग। उसको कहा भी ऐसे ही जाता है 21 पीढ़ी राज और भाग मिलता है। किससे मिलता है ये कोई नहीं... सिर्फ गायन है कि 21 पीढ़ी...। तो ज़रूर समझेंगे कि बेहद के बाप से 21 पीढ़ी...। हद के बाप से तो पूरी पीढ़ी भी नहीं मिलती है। ...जन्म ही थोड़ा होता है और क्या मिलता है! तो कहाँ हद की ! भले यहाँ कितने भी साहूकार हैं तो भी गरीब हैं; क्योंकि विनाश तो उनका भी होना है ना। साहूकारों का भी विनाश होना है तो गरीबों का भी विनाश होना है। तो साहूकार भी शरीर छोड़ करके खतम कर देने का है, फिर तो यहाँ नहीं आने का है। गरीब तो हैं ही गरीब। तो गरीब फिर बैठ करके भविष्य के लिए साहूकार बन रहे हैं और बाकी जो कुछ भी, देखो कितनी बड़ी–2 सृष्टि है... कितने–2 धनवान हैं, उन बिचारों को तो कुछ पता ही नहीं है। जब भी लड़ाई का कुछ बड़ा इत्तफ़ाक निकल जाता है तो समझते हैं विनाश; पर विनाश हो तो क्या होगा ये भी बिचारे कुछ भी नहीं जानते हैं। भले अगर कहें भी कि वही महाभारी महाभारत की लड़ाई है, ऐसे कह देंगे; परन्तु उनके बाद क्या हुआ था वो तो फिर भी किसको मालूम नहीं रहेगा सिवाय तुम्हारे। उनको ये थोड़े ही मालूम रहेगा कि विनाश के बाद फिर कोई लक्ष्मी–नारायण का राज्य खड़ा होता है; क्योंकि विनाश के बाद तो कुछ रहा ही नहीं था। पाण्डव भी जाकर गले थे। तो उनको थोड़े ही बुद्धि में ये रहेगा। तुम बच्चों की तो बुद्धि में ये है ना कि हम बाप से स्वराज्य ले रहे हैं। है भी राजयोग। गीता दिखलाते भी हैं। फिर भी राजयोग की रिज़ल्ट कुछ भी दिखलाई नहीं है जो कोई समझ सके कि भारत फिर बहिश्त या स्वर्ग बनता है। अभी ये बत्ती के होते भी कर सकते हैं। लालबत्ती की कोई ज़रूरत है नहीं। ऐसे भी कर देते

हैं। कभी भी समझो कहाँ भी जाते हैं, कुछ भी बाजा बजाने की दरकार नहीं है, चित्त एकदम शांत। लालबत्ती की भी कोई दरकार नहीं है जो फिर वहाँ भी बैठ करके लगाना पड़े; इसलिए प्रैक्टिस करते हैं। बाबा कहाँ भी जाएँगे तो न बाजा बजाएँगे, न ये ... लेंगे, न कोई बत्ती जगाएँगे। शांत में नहीं रह सकते, बाप को याद नहीं कर सकते ? वाह! रात को भी याद कर सके तो दिन में भी याद कर सके। जब चाहें तब याद कर सकें। अच्छा, नॉलेज है, वो रात को भी दी जा सकती है, दिन में भी दी जा सकती है। रोज़ सुनने से बहुत नई–2 प्वाइंट्स किसको समझाने के लिए मिलती रहती हैं तो किसको भी समझाना सहज हो जाता है। जैसे दो बाप की बात भी समझाई जाती है ना। तो इन्होंने भी वहाँ गोविंद से पूछा होगा। गोविंद नाम है ना! (किसी ने कहा– जी) देखो, गाया तो गया हुआ है ना कि दो बाप हैं– एक बेहद का, एक हद का। तो देखो, हद का तो आत्माएँ सभी हैं। अभी बेहद की आत्माओं का तो सभी (एक ही) बाप है। अभी फिर बेहद के बाप के बच्चे भी तो हैं ना। तो बरोबर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलना होता है 21 पीढ़ी। तो ज़रूर दोनों बेहद के बाप। वो आत्माओं का बेहद का बाप, तो ये देखो मनुष्यों का बेहद का बाप। अभी देखो, गोविन्द को भी समझाना ये कितना सहज है। भले समझते नहीं हैं, भले पवित्र न रह सके या खान–पान न छोड़ सके; परन्तु उनको ये तो सिद्ध करके बताना है ना कि देखो हद के भी बाप हैं, बेहद के भी बाप हैं। अभी देखो इनके कितने बच्चे हैं! ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ वृद्धि को पाते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन सेन्टर्स खुलते रहते हैं। तो देखो हैं ना, बेहद का बाप साकार, बेहद का बाप निराकार। तो दोनों ही इकट्ठे हैं ; क्योंकि साकार में वर्सा मिलना है। कोई निराकारी में तो वर्सा नहीं मिलता है। देता है निराकार वर्सा; क्योंकि साकार के तो वर्से हैं ही अल्पकाल क्षणभंगुर के। ये तो 21 पीढ़ी के हैं। तो देखो, ये कितने सौभाग्यशाली हैं! प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का वो वर्सा लेते हैं। वो जन्म–जन्मांतर का हद का बाप एक ही बार देते हैं। तो देखो, स्वर्ग में 21 पीढ़ी हम लोग सुख भोगते हैं। अभी समझाने का ये बहुत सहज है। भले कुछ भी न समझे; परन्तु उसकी बुद्धि में बैठेगा तो ज़रूर ना कि दो बाप से सब...। कोई को समझाओ तो हाँ ज़रूर कहेंगे। बरोबर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ज़रूर मिलेगा। तो बेहद के बाप का वर्सा है भी बरोबर 21 जन्म के लिए ; क्योंकि इस जन्म की कमाई, इस समय बाप के द्वारा कमाई 21 पीढ़ी चलती है। ये कितनी बड़ी कमाई है! अच्छा, वो कमाई करने के लिए बाबा किसको मना नहीं करते हैं। देखो, वकील है, डायरैक्टर है, व्यापारी है, लखपति है। देखो, कलकत्ते में सेन्टर्स खुलते हैं, वो लोग आपे ही सलामी देते हैं तो पगड़ियाँ भी देते हैं, सब देते हैं। वो भी तो बच्चे हैं ना। तो ज़रूर उनको वो सभी बच्चे भी तो बाबा–2 कहते हैं ना। ये भी तो वण्डर है ना– स्त्री भी आकर बाबा कहे तो पुरुष भी आकर बाबा कहे! ये तुम समझो तो सही, कितना वण्डर का खेल है! तो उनको थोड़ा–2 समझाने से फिर वो समझ जाएँगे। दिन–प्रतिदिन बहुत होते जाएँगे ना, तो कोई न कोई समय में...। अच्छा, सुनते तो रहेंगे ना। फिर भी तुमने उनके ऊपर कुछ ये तो किया ना कि बिचारा सुनते–2 वहाँ तो आ जाएँगे ना। भले फिर कुछ भी न करे, तो भी कुछ आ तो जाएगा ना। सतयुग में आ जाएगा। सज़ाएँ तो भोगेंगे। अच्छा, जाकर गरीब प्रजा के पास कोई नौकर–चाकर बनेगा या कुछ दो पैसा, चार पैसा दिया होगा तो कुछ होगा, नहीं तो भले कोई नौकर–चाकर रहेंगे। हो तो सकता है ना। आज इनके आगे क्या हो, कह नहीं सकते हैं; परन्तु बाबा कहते हैं कि अभी इस समय में कोई ऐसे मर जावे तो उसकी क्या गति होगी? तो बाप बैठकर समझाते हैं (कि) उसकी भी यह अच्छी गति हो सकती है। फिर भी सुना तो सही ना। भले पाप नहीं काट सके, याद की यात्रा में न चल (सके)। तो पाप तो रह जाएगा, बहुत सज़ा खाएँगे और फिर जा करके कोई गरीब के वहाँ ऐसे रहेंगे। किसको भी समझाने में फायदा तो हुआ ना। तो कोशिश करके समझाना ज़रूर चाहिए। कुछ न कुछ उनका कल्याण हो जावे तो स्वर्ग में तो आ सके ; क्योंकि बननी तो बहुत है ना...। बस, इतना भी उनको समझाया, दिल से कुछ थोड़ा–बहुत लगा, ये भी

काफी है; क्योंकि बाप कहते हैं ना– इस ज्ञान का विनाश नहीं होता है। इनको भी समझाओ। अभी भी तो समय बहुत पड़ा है ना। आगे चल करके शायद जास्ती भी ले लेवे। तो कुछ न कुछ उनमें पड़ी होगी तो शायद वो वृद्धि को भी पा लेवे, कशिश हो जावे। इसलिए कोई भी मित्र–संबंधी ; क्योंकि गाया जाता है ना– चैरिटी बिगन्स एट होम। यात्रा में भी जाते हैं तो परिवार, ... साले, भानजे, ये सभी इकट्ठा होते हैं। कोई बाहर वालों को, पब्लिक को नहीं कहते हैं। इकट्ठा ही होते हैं ...बिरादरी वाले, गलियाँ वाले...। तो ये भी ऐसे ही है। कोई न कोई जो भी मित्र–संबंधी होवे पहचान वाला...। ये दो बाप की बात समझाने की बिल्कुल अच्छी और सहज है– वो बेहद का, ये हद का। बेहद का तो देखो है ना। ..... आत्माएँ तो सभी हैं। अभी वर्सा के लिए तो साकार में चाहिए। तो देखो, बेहद के बाप के बच्चे हैं। ये समझाना क्या मुश्किल है? मोस्ट ईज़ी है, बिल्कुल ईज़ी। दिन–प्रतिदिन बहुत ईज़ी समझाया जाता है। .. सन्मुख आते हैं, समझते हैं। समझते हैं कि ये अच्छी प्वाइंट है समझाना, कोई भी हो, तो उनको लगेगा, फिर आगे चलकर देखेंगे बहुत जाते हैं तो हिर्स होगी; क्योंकि बहुत बनना है, कोई थोड़ी थोड़े (ही) बननी है, ढेर। बेहद के बाप का सिकीलधा बच्चा हूँ, नशा नहीं रहता होगा! तुम भी समझते हो। तभी तो देखो इनको बताता हूँ ना– ....किसको खिलाते हो? शिवबाबा के रथ को खिलाएंगे। शिवबाबा तो याद पड़ता है ना। इनको सिखलाता हूँ– ये भी बैठ करके खिलाते हो, किसके रथ को खिलाते हो? शिवबाबा तो नहीं खाते हैं, बाकी उनके रथ की करते हो ना। तो शिवबाबा याद आता है ना। समझाते (हैं) बाबा को भी शिवबाबा याद आएगा। तो देखो, दोनों को फायदा होता है ना। है बात छोटी; परन्तु कमाई जबरदस्त। याद, याद, याद से एवर हेल्दी बनते हैं। अपने बाहर में लिख देवें– हेल्थ, वेल्थ एण्ड हैप्पीनेस फॉर 21 जनरेशन इन ए सेकेण्ड। बाहर में बोर्ड लगा देवे गुजराती में, हिन्दी में, सिंधी में, जिस–2 भाषा में हो। हैं तो थोड़े अक्षर ना। हेल्थ, वेल्थ एण्ड हैप्पीनेस फॉर 21 जनरेशन... हेल्थ, वेल्थ एण्ड हैप्पीनेस फॉर सतयुग फॉर 21 जनरेशन। इन सतयुग, ऐसे भी लिख सकते हैं। बोर्ड लगा हुआ है, बहनों–भाइयों आकर समझो। इनके पास चित्र भी तो रखे हैं। तो सबके पास बोर्ड लगे हुए हों; क्योंकि तुम लोग सर्जन्स हो। जो भी सर्जन होगा, बाहर में बोर्ड ज़रूर लगा हुआ होगा– फलाना एम.बी. एस. या बैरिस्टर होगा तो बी.(ए.)एल.एल.बी.। ऐसे कहेगा ना। तो तुम्हारा भी ये बोर्ड लगा पड़ा होवे, प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ नीचे में... क्योंकि ब्रह्माकुमारियाँ तो ज़रूर ही बहुत बच्चे ठहरे ना। तो ज़रूर इनका फिर ब्रह्मा शिवबाबा का बच्चा। वर्सा तो मिलता ही है शिवबाबा (से)। ब्रह्मा तो दे ही नहीं सकते हैं वर्से..। बेहद का बाप एक। वर्सा उनसे मिलना है। बहुत सहज है। ढेर सर्विस हो सकती है..। उसमें भी पहले भले कोशिश करनी चाहिए मित्र–संबंधी यहाँ–वहाँ। तो भी ये अच्छी ... है कि हमारी जो राजधानी स्थापन हो जाए तो हम अपनी राजधानी में चलें, जब तलक यहाँ हमारे बाबा के साथ बच्चे बैठे हैं; क्योंकि भले थोड़ा–बहुत दुःख है; क्योंकि पुरानी दुनिया है; परन्तु नहीं, इसमें रहना ही अच्छा है; क्योंकि बाप के साथ रहते हैं। तुम्हारा गायन है बहुत अच्छी तरह से। इस समय में तुम्हारा गायन है कि सभी कामनाएँ पूर्ण करती हैं। फिर वो गायन है कि उन देवियों से कुछ न कुछ माँगते हैं। जरा पूछो जाकर के। मीठे–2 लवली बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट।

ये भी तुमको बाबा ने क्यों कहा कि जाओ, बॉम्बे जाओ, कलकत्ता चक्कर लगाओ। बाबा समझते हैं (कि) जाएँगी और जा करके टिकलू–2 करेंगी तो बहुतों का कल्याण भी होगा।